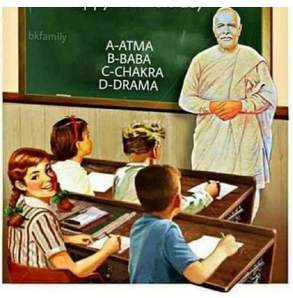

"मीठे बच्चे - बेहद के सुखों के लिए तुम्हें बेहद की नॉलेज मिलती है, तुम फिर से राजयोग की शिक्षा से राजाई ले रहे हो"

Most imp.

प्रश्नः-तुम्हारा ईश्वरीय कुटुम्ब किस बात में बिल्कुल ही निराला है?

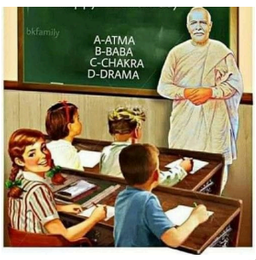

उत्तरः-इस ईश्वरीय कुटुम्ब में कोई एक रोज़ का बच्चा है, कोई 8 रोज़ का लेकिन सब पढ़ रहे हैं। बाप ही टीचर बनकर अपने बच्चों को पढ़ा रहे हैं। यह है निराली बात। आत्मा पढ़ती है। आत्मा कहती है बाबा, बाबा फिर बच्चों को 84 जन्मों की कहानी सुनाते हैं।

most sweet words

गीत:-दूरदेश का रहने वाला..... Click

ओम् शान्ति। वृक्षपति वार, उसका नाम रख दिया है बृहस्पति। यह त्योहार आदि तो वर्ष-वर्ष मनाते हैं। तुम हर हफ्ते बृहस्पति डे मनाते हो। वृक्षपति अथवा इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ का जो

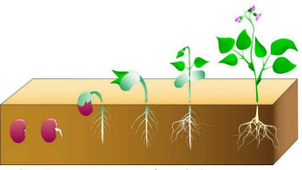

सृष्टि रूपी उल्टा व अद्भुत वृक्ष और उसके बीजरूप परमात्मा

How Great we all are...!

बीजरूप है, चैतन्य है, वही इस झाड़ के आदि-मध्य -अन्त को जानते हैं, और जो भी वृक्ष हैं वह सब जड़ होते हैं। यह है चैतन्य, इनको कहा जाता है कल्पवृक्ष। इनकी आयु है 5 हज़ार वर्ष और यह वृक्ष 4 भाग में है। हर चीज़ 4 भाग में होती है। यह दुनिया भी 4 भाग में है। अब इस पुरानी दुनिया का अन्त है। दुनिया कितनी बड़ी है, यह ज्ञान कोई भी मनुष्य मात्र की बुद्धि में नहीं है। यह है नई दुनिया के लिए नई शिक्षा। और फिर नई दुनिया का राजा बनने के लिए अथवा आदि सनातन देवी-देवता बनने के लिए शिक्षा भी नई है। भाषा तो हिन्दी ही है। बाबा ने समझाया है जब दूसरी राजाई स्थापन होती है तो उनकी भाषा अलग होती है। सतयुग में क्या भाषा होगी? सो बच्चे थोड़ा-थोड़ा जानते हैं। आगे बच्चियाँ ध्यान में जाकर बतलाती थी। वहाँ कोई संस्कृत नहीं है। संस्कृत तो यहाँ है ना। जो यहाँ है वह फिर वहाँ नहीं हो सकती। तो बच्चे जानते हैं यह है वृक्षपति। उनको फादर रचता भी कहते हैं झाड़ का। यह है चैतन्य बीजरूप। वह सब होते हैं जड़। बच्चों को

वर्तमान समय हम युग परिवर्तन काल से गुज़र रहे हैं जब कलयुग की समाप्ति और सतयुग का आरम्भ होता है इस युग को संगमयुग कहा जाता है, जब स्वयं परमात्मा इस धरा पर अवतरित होते हैं। इस सृष्टि के पूर्व निश्चित इतिहास और भूगोल को हर कल्प (5000 वर्ष) के बाद हूबहू पुनरावृत्ति होती है।

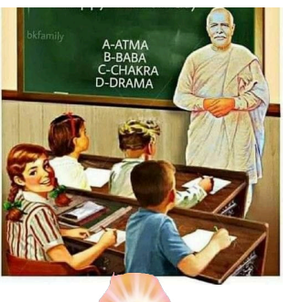

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥
हे अर्जुन! मेरे जन्म और कर्म दिव्य अर्थात् निर्मल और अलौकिक हैं—इस प्रकार जो मनुष्य तत्त्वसे* जान लेता है, वह शरीरको त्यागकर फिर जन्मको प्राप्त नहीं होता, किन्तु मुझे ही प्राप्त होता है॥ ९॥

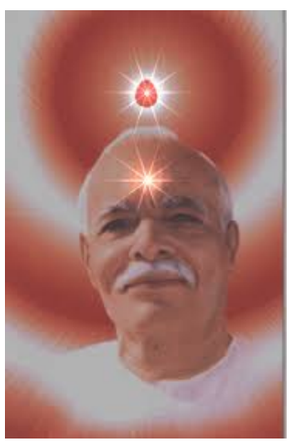

सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को भी जानना चाहिए ना। इस समय नॉलेज न होने कारण मनुष्यों को सुख नहीं है। यह है बेहद की नॉलेज, जिससे बेहद का सुख होता है। हद की नॉलेज से काग विष्टा समान सुख मिलता है। तुम जानते हो, हम बेहद के सुख के लिए अभी पुरुषार्थ कर रहे हैं फिर से। यह 'फिर से' अक्षर सिर्फ तुम सुनते हो। तुम ही फिर से मनुष्य से देवता बनने के लिए यह राजयोग की शिक्षा प्राप्त कर रहे हो। यह भी तुम जानते हो ज्ञान का सागर बाप निराकार है। निराकारी तो बच्चे आत्मायें भी हैं, लेकिन सबको अपना-अपना शरीर है, इनको अलौकिक जन्म कहा जाता है। और कोई मनुष्य ऐसे जन्म ले नहीं सकते। जैसे यह लेते हैं और इनकी भी वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करते हैं। बच्चों (आत्माओं) को सम्मुख बैठ समझाते हैं, और कोई आत्माओं को बच्चे-बच्चे कह न सकें। कोई भी धर्म वाला हो - जानते हैं शिवबाबा हम आत्माओं का बाबा है, वह तो जरूर बच्चे-बच्चे ही कहेंगे। बाकी कोई भी मनुष्यात्मा को ईश्वर नहीं कह सकते, बाबा नहीं कह सकते।

Mind Very Well...

यूँ तो गांधी को भी बापू कहते थे। म्युनिसपाल्टी के मेयर को भी फादर कह देते। परन्तु वह फादर हैं सब देहधारी। तुम जानते हो हमारी आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं। बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं अपने को आत्मा समझो। वह बाप आकर पढ़ाते भी आत्माओं को हैं। यह है ईश्वरीय कुटुम्ब। बाप के इतने ढेर बच्चे हैं। तुम भी कहते हो बाबा हम आपके हैं। तुम बच्चे हो गये। कहते हैं बाबा हम एक रोज़ का बच्चा हूँ, 8 रोज का बच्चा हूँ, मास का बच्चा हूँ। पहले जरूर छोटा ही होगा। भल 2-4 दिन का बच्चा ही है परन्तु आरगन्स तो बड़े हैं ना इसलिए सब बड़े बच्चों को पढ़ाई चाहिए। जो भी आते हैं सबको बाप पढ़ाते हैं। तुम भी पढ़ते हो। बाप के बच्चे बने फिर बाप समझाते हैं, तुमने 84 जन्म कैसे लिये हैं? बाप कहते हैं मैं भी बहुत जन्मों के अन्त में इनमें प्रवेश करता हूँ और फिर पढ़ाता हूँ। बच्चे जानते हैं यहाँ हम बड़े ते बड़े टीचर के पास आये हैं। जिससे ही फिर यह टीचर्स निकले हैं जिनको पण्डे कहते हैं। वह भी सबको पढ़ाते रहते हैं। जो-जो जानते जायेंगे, पढ़ाते रहेंगे।

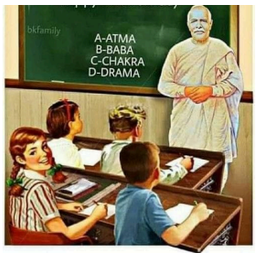

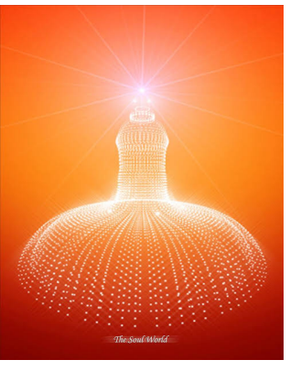

पहले-पहले तो समझाना ही यह है, दो बाप हैं ना। एक लौकिक और दूसरा पारलौकिक। बड़ा तो जरूर पारलौकिक बाप हो गया, जिसको भगवान कहा जाता है। तुम जानते हो अभी हमको पारलौकिक बाप मिला है, और किसी को पता नहीं। धीरे-धीरे जानते जायेंगे। तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं को बाबा पढ़ाते हैं। हम आत्मायें ही एक शरीर छोड़ फिर दूसरा लेंगी। ऊंच से ऊंच देवता बनेंगी। ऊंच से ऊंच बनने के लिए आये हैं।

कई बच्चे चलते-चलते ऊंचे से ऊंची पढ़ाई को छोड़ देते हैं, किसी न किसी बात में संशय आ जाता है या माया का कोई तूफान सहन नहीं कर सकते हैं, काम महाशत्रु से हार खा लेते हैं, इन्हीं कारणों से पढ़ाई छूट जाती है। काम महा-शत्रु के कारण ही बच्चों को बहुत सहन करना पड़ता है। बाप कहते हैं कल्प-कल्प तुम अबलायें मातायें ही पुकारती हो। कहते हैं बाबा हमको नंगन होने से बचाओ। बाप कहते हैं याद के सिवाए और कोई रास्ता नहीं। याद से ही बल आता जायेगा। माया

One and Only Way...

बलवान की ताकत कम होती जायेगी। फिर तुम छूट जायेंगे। ऐसे बहुत बन्धन से छूट-कर आते हैं। फिर अत्याचार होना बन्द हो जाता है फिर आकर शिवबाबा से ब्रह्मा द्वारा बातचीत करते हैं। यह भी आदत पड़ जानी चाहिए। बुद्धि में यह रहना चाहिए कि हम शिवबाबा पास जाते हैं। वह इस ब्रह्मा तन में आते हैं। हम शिवबाबा के आगे बैठे हैं। याद से ही विकर्म विनाश होंगे। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है। यही शिक्षा मिलती है। बाप से मिलने आओ तो भी अपने को आत्मा समझो। आत्म-अभिमानी भव। यह ज्ञान भी तुमको अभी मिलता है। यह है मेहनत। उस भक्ति मार्ग में तो कितने वेद शास्त्र आदि पढ़ते हैं। यह तो एक ही मेहनत है - सिर्फ याद की। यह बहुत सहज ते सहज है, बहुत डिफीकल्ट ते डिफीकल्ट भी है। बाप को याद करना - इससे सहज कोई बात होती नहीं। बच्चा पैदा हुआ और मुख से बाबा-बाबा निकलेगा। बच्ची के मुख से माँ निकलेगा। आत्मा ने फीमेल का शरीर धारण किया है। फीमेल माँ के पास ही जायेगी। बच्चा अक्सर

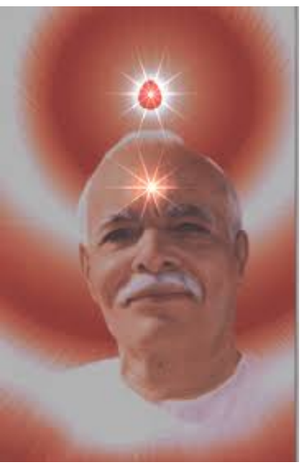

करके बाप को याद करता है क्योंकि वर्सा मिलता है। अभी तुम आत्मायें तो सब बच्चे हो। तुमको वर्सा मिलता है बाप से। आत्मा को बाप से वर्सा मिलता है, याद करने से। देह-अभिमानी होंगे तो वर्सा पाने में मुश्किलात होगी। बाप कहते हैं मैं बच्चों को ही पढ़ाता हूँ। बच्चे भी जानते हैं हम बच्चों को बाप पढ़ाते हैं। यह बातें बाप के सिवाए कोई बता न सके। उनके साथ ही भक्ति मार्ग में तुम्हारा प्यार था। तुम सब आशिक थे, उस माशूक के। सारी दुनिया आशिक है एक माशूक की। परमात्मा को सब परमपिता भी कहते हैं। बाप को आशिक नहीं कहा जाता। बाप समझाते हैं तुम भक्ति मार्ग में आशिक थे। अभी भी हैं बहुत, परन्तु परमात्मा किसको कहा जाए, इसमें बहुत मूँझते हैं। गणेश, हनूमान आदि को परमात्मा कह एकदम सूत मुँझा दिया है। सिवाए एक के कोई ठीक कर न सके। कोई की ताकत नहीं। बाप ही आकर बच्चों को समझाते हैं। बच्चे फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार समझते हैं और समझाने के लायक बनते हैं। राजधानी स्थापन हो रही है। हूबहू

Attention...!

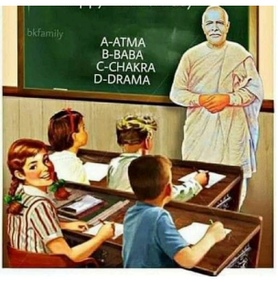

Exclusive Authority of Shivbaba..

याद करो...

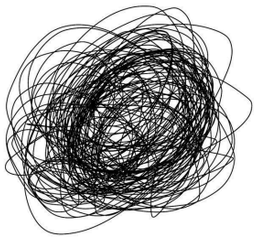

कल्प पहले मिसल तुम यहाँ पढ़ते हो। फिर प्रालब्ध नई दुनिया में पायेंगे उनको अमरलोक कहा जाता है। तुम काल पर विजय पाते हो। वहाँ कभी अकाले मृत्यु होती नहीं। नाम ही है स्वर्ग। तुम बच्चों को इस पढ़ाई में बहुत खुशी होनी चाहिए। बाप की याद से बाप की प्रापर्टी भी याद आयेगी। सेकण्ड में सारे ड्रामा का ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन, 84 का चक्र बस, यह नाटक सारा भारत पर ही बना हुआ है। बाकी सब हैं बाईप्लाट। बाप नॉलेज भी तुमको सुनाते हैं। तुम ही ऊंच से ऊंच फिर नींच बने हो। डबल सिरताज राव और फिर बिल्कुल ही रंक। अब भारत रंक भिखारी है। प्रजा का प्रजा पर राज्य है। सतयुग में था डबल सिरताज महाराजा-महारानी का राज्य। सब मानते हैं आदि देव ब्रह्मा को नाम बहुत दिये हैं। महावीर भी उनको कहते हैं, महावीर हनूमान को भी कहते हैं। वास्तव में तुम बच्चे ही सच्चे-सच्चे महावीर हनूमान हो क्योंकि तुम योग में इतना रहते हो जो माया के भल कितने भी तूफान आयें लेकिन तुम्हें

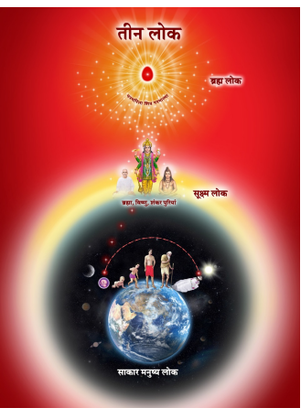

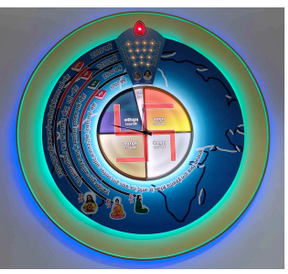

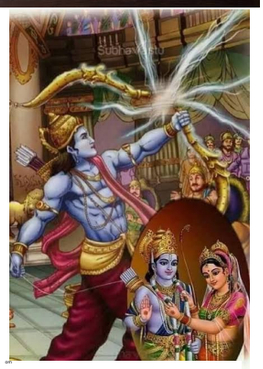

हिला नहीं सकते। तुम महावीर के बच्चे महावीर बने हो क्योंकि तुम माया पर जीत पाते हो। 5 विकार रूपी रावण पर हर एक जीत पाते हैं। एक मनुष्य की बात नहीं। तुम हर एक को धनुष तोड़ना है अर्थात् माया पर जीत पानी है। इसमें लड़ाई आदि की कोई बात नहीं। यूरोपवासी कैसे लड़ते हैं, भारत में कौरवों और यौवनों की लड़ाई है। गाया भी हुआ है रक्त की नदियां बहती हैं। दूध की भी नदियां बहेंगी। विष्णु को क्षीरसागर में दिखाते हैं, लक्ष्मी-नारायण है पारसनाथ। उनका फिर नेपाल तरफ पशुपति नाम रख दिया है। है एक ही विष्णु के दो रूप, पारसनाथ पारसनाथिनी। वह है पशुपतिनाथ पति, पशुपतिनाथ पत्नी। उसमें विष्णु का चित्र बनाते हैं। लेक भी बनाते हैं। अब लेक में क्षीर (दूध) कहाँ से आया। बड़े दिन पर उस लेक में दूध डालते हैं, फिर दिखाते हैं क्षीरसागर में विष्णु सोया पड़ा है। अर्थ कुछ भी नहीं। 4 भुजा वाला मनुष्य तो कोई होता नहीं।

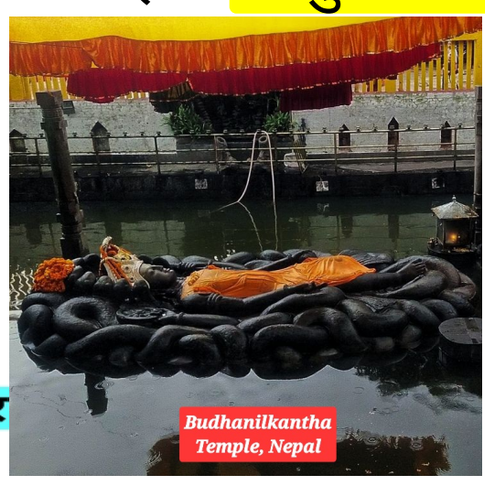

Most imp.

05-06-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हाँ मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

अभी तुम बच्चे सोशल वर्कर हो, रूहानी बाप के बच्चे हो ना। बाप सब बातें समझाते हैं, इसमें कोई संशय नहीं आना चाहिए। संशय माना माया का तूफान। तुम हमको बुलाते ही हो हे पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। 84 के चक्र को भी याद करना है। बाप को कहा जाता है पतित-पावन, ज्ञान का सागर, दो चीज़ हो गई। पतितों को पावन बनाते और 84 के चक्र का ज्ञान सुनाते हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो 84 का चक्र चलता ही रहेगा, इनकी इन्ड नहीं है। यह भी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हो - बाप कितना मीठा है, उनको पतियों का पति भी कहते हैं। बाप भी है। अब बाप कहते हैं मेरे से तुम बच्चों को बड़ा भारी वर्सा मिलता है। परन्तु ऐसे मुझ बाप को भी फारकती दे देते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है, पढ़ाई को ही छोड़ देते। गोया फारकती दे देते, कितने बेसमझ हैं। जो अक्लमंद बच्चे हैं वह सहज ही सब बातों को समझकर दूसरों को पढ़ाने लग पड़ेंगे। वह फौरन निर्णय लेंगे कि उस पढ़ाई से क्या

M.Imp.

Again... & Again & Again...

Definition of..

मिलता है और इस पढ़ाई से क्या मिलता है। क्या पढ़ना चाहिए। बाबा बच्चों से पूछते हैं, बच्चे समझते भी हैं कि यह पढ़ाई बहुत अच्छी है। फिर भी कहते क्या करें, जिस्मानी पढ़ाई नहीं पढ़ेंगे तो मित्र-सम्बन्धी आदि नाराज़ होंगे। बाप कहते हैं - दिन-प्रतिदिन टाइम बहुत थोड़ा होता जाता है। इतनी पढ़ाई तो पढ़ नहीं सकेंगे। बड़े ज़ोर से तैयारियाँ हो रही हैं। हर प्रकार से तैयारी होती है ना। दिन-प्रतिदिन एक-दो में दुश्मनी बढ़ती जाती है। कहते भी हैं ऐसी-ऐसी चीज़ें बनाई हैं जो फट से सबको खलास कर देंगे। तुम बच्चे जानते हो ड्रामा अनुसार अब लड़ाई लग नहीं सकती, राजाई स्थापन होनी है तब तक हम भी तैयारी कर रहे हैं। यह भी तैयारी करते रहते हैं। तुम्हारा पिछाड़ी में बहुत प्रभाव निकलने का है। गाया भी जाता है अहो प्रभू तेरी लीला। यह इसी समय का गायन है। यह भी गाया हुआ है तुम्हारी गति मत न्यारी। सब आत्माओं का पार्ट न्यारा है। अभी बाप तुमको श्रीमत दे रहे हैं कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। कहाँ श्रीमत, कहाँ मनुष्यों की मत।

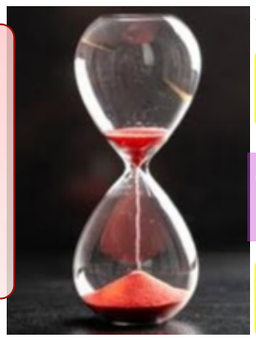

अब तो जागो....

example:=>
- NATO Ukraine v/s Russia
- Israel v/s Gaza or palestine

Said it before 1969, and Now, It is 2025

So, Be Prepared..

Coming Soon...
Be ready...

तुम जानते हो विश्व में शान्ति सिवाए परमपिता परमात्मा के कोई कर न सके। 100 परसेन्ट पवित्रता-सुख-शान्ति 5 हज़ार वर्ष पहले मुआफिक ड्रामा अनुसार स्थापन कर रहे हैं। कैसे? सो आकर समझो। तुम बच्चे भी मददगार बनते हो। जो बहुत मदद करेंगे वह विजय माला के दाने बन जाते। तुम बच्चों के नाम भी कितने रमणीक थे। वह नाम की लिस्ट एलबम में रख देनी चाहिए। तुम भट्टी में थे, घरबार छोड़ बाप के आकर बने। एकदम भट्टी में आकर पड़े। ऐसी पक्की भट्टी थी जो अन्दर कोई आ न सके। जब बाप के बन गये तो फिर नाम जरूर होने चाहिए। सब कुछ सरेन्डर कर दिया, इसलिए नाम रख दिये। वन्डर है ना - बाप ने सबके नाम रखे। अच्छा।

समजा?

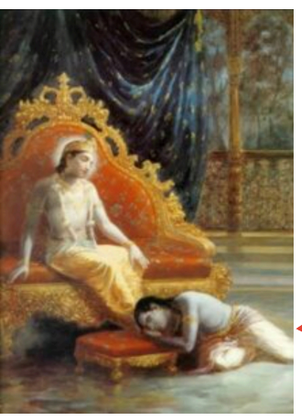

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) किसी भी बात में संशय बुद्धि नहीं बनना है, माया के तूफानों को महावीर बन पार करना है, ऐसा योग में रहो जो माया का तूफान हिला न सके।

2) अक्लमंद बन अपनी जीवन ईश्वरीय सेवा में लगानी है। सच्चा-सच्चा रूहानी सोशल वर्कर बनना है। रूहानी पढ़ाई पढ़नी और पढ़ानी है।

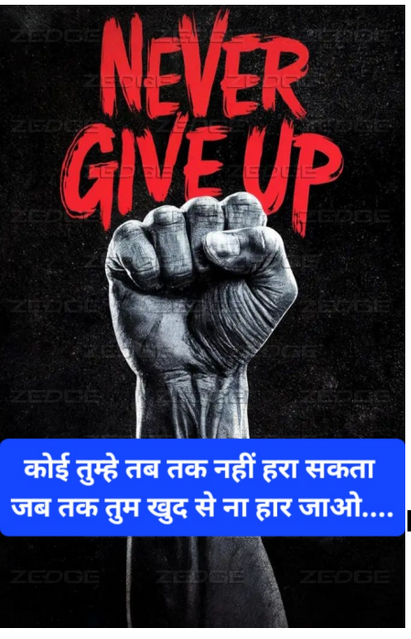

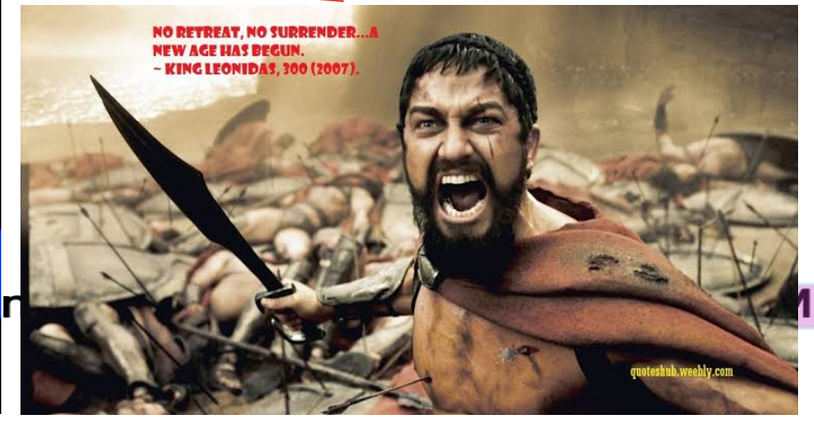

M.imp.

वरदान:-अहम् और वहम को समाप्त कर रहमदिल बनने वाले विश्व कल्याणकारी भव

कैसी भी अवगुण वाली, कड़े संस्कार वाली, कम बुद्धि वाली, सदा ग्लानि करने वाली आत्मा हो लेकिन जो रहमदिल विश्व कल्याणकारी बच्चे हैं वे सर्व आत्माओं के प्रति लॉफुल के साथ लवफुल होंगे।

कभी इस वहम में नहीं आयेंगे कि यह तो कभी बदल ही नहीं सकते, यह तो हैं ही ऐसे....या यह कुछ नहीं कर सकते, मैं ही सब कुछ हूँ..यह कुछ नहीं हैं।

इस प्रकार का अहम् और वहम छोड़, कमजोरियों वा बुराइयों को जानते हुए भी क्षमा करने वाले रहमदिल बच्चे ही विश्व कल्याण की सेवा में सफल होते हैं।

स्लोगन:-जहाँ ब्राह्मणों के तन-मन-धन का सहयोग है वहाँ सफलता साथ है।

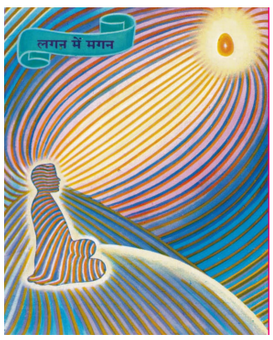

अव्यक्त इशारे - आत्मिक स्थिति में रहने का अभ्यास करो, अन्तर्मुखी बनो

आत्मायें जब आपके आत्मिक स्वरूप का अनुभव करेंगी तब वे बाप की तरफ आकर्षित होकर, अहो प्रभू के गीत गायेंगी और देहभान से सहज अर्पण हो जायेंगी।

feel the difference

अहो आपका भाग्य! ओहो! मेरा भाग्य! इस भाग्य की अनुभूति के कारण देह और देह के सम्बन्ध की स्मृति का त्याग कर देंगी।

"फाइनल पेपर" book से "अव्यक्त बापदादा" के महावाक्य जो यहां रखते हैं, वो नये महावाक्य हर तीसरे दिन पर रखते है, जिसका उद्देश्य ये है की आज के जो महावाक्य यहां रखे गए हैं उसको कल और परसों रिवाइज कर सके। जिससे कि वह महावाक्य हमारे अंदर तक उतर जाए।

नहीं तो क्या होता है कि हर रोज नए महावाक्य आते हैं तो आगे के महावाक्य जैसे कि बुद्धि से erase से हो जाते है। इसलिए हम एक ही महावाक्य को तीन दिन तक revise करेंगे। जिससे कि वो महावाक्य हमारे अंतर मन मे उतर जाएंगे।

साथ ही इसी महावाक्य का video की लिंक भी रखेंगे जिससे कि चलते फिरते, काम करते, ऑफिस आते-जाते कभी भी सुन कर revise कर सकेंगे।

Revision is the key to Remember/inculcation...

आप भी महसूस करेंगे कि आज के वही महावाक्य , दूसरे - तीसरे दिन के revision पर उसका अति गूढ़ अर्थ (आपके यथा शक्ति पुरुषार्थ प्रमाण) आपके सामने प्रगट होगा।। इसी को मीठे प्यारे बापदादा ज्ञान का मनन-मंथन व ज्ञान की गहराई में जाना कहते है।

जिस प्रकार बिना मथे दूध में छिपा माखन नहीं मिल सकता उसी प्रकार हमें इन महा वाक्यों को revise करके उसकी गहराई तक जाना पड़ेगा तभी माखन व सच्चे रत्न प्राप्त होंगे।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

यहाँ पर रखे गए महावाक्यों का वीडियो, Revision के लिए ====> Click

फाइनल पेपर

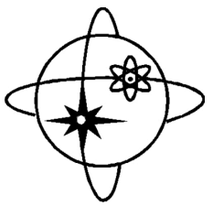

(उस समय कुछ हुआ होगा...)

यह तो अभी कुछ नहीं हुआ। अब तो बहुत कुछ होना है। आप सोचेंगे अचानक हो गया, इसलिये थोड़ा-सा हुआ। लेकिन पेपर तो अचानक आवेंगे, पेपर कोई बता कर नहीं आवेंगे। पहले बता तो दिया है कि ऐसे-ऐसे पेपर होने वाले हैं। लेकिन उस समय अचानक होता है। तो अचानक पेपर में अगर जरा संकल्प में भी हिलना हुआ तो अंगद मिसल हुए? अब वह लास्ट स्टेज नहीं आई है क्या? पूछ रहे थे ना समीप से भी ज्यादा नजदीक कौनसी स्टेज होती है? वह होती है सम्मुख दिखाई देना। समीप आते-आते वही वस्तु सम्मुख हो जाती है। तो समीप का अनुभव करते हो वा बिल्कुल वह स्टेज सम्मुख दिखाई देती है? आज यह हैं, कल यह बन जावेंगे-ऐसे सम्मुख अनुभव करते हो? जैसे साकार में अनुभव देखा-तो भविष्यस्वरुप और अंतिम सम्पूर्ण स्वरुप सदा सम्मुख स्पष्ट रूप में रहता था ना। तो फालो फादर करना है। जैसे बाप के सामने सम्पूर्ण स्टेज वा भविष्य स्टेज सदा सामने रहती है, वैसे ही अनुभव हो रहा है? कि सोचते हो -'पता नहीं क्या भविष्य होना है? वह स्पष्ट होता कहां है? अनाउन्स तो होता नहीं।' लेकिन जो महावीर पुरुषार्थी हैं उनकी बुद्धि में सदा अपने प्रति स्पष्ट रहता है। तो स्पष्ट देखने में आता है वा थोड़ा-बहुत घूंघट बीच में है? आजकल ट्रान्सपेरेन्ट घूंघट भी होता है। दिखाई सभी कुछ देता है फिर भी घूंघट होता है। लेकिन वैसे स्पष्ट देखना और घूंघट बीच देखना-फर्क तो होगा ना? तो अपने पुरुषार्थ प्रमाण ट्रान्सपेरेन्ट रुप में घूंघट तो नहीं

रह गया है? बिल्कुल ही स्पष्ट है ना? तो मधुबन निवासी अटल हैं ना। कि यह संकल्प भी है कि यह क्या होता है? क्यों, क्या का क्वेश्चन तो नहीं? जो भी पार्ट चलते हैं उन हरेक पार्ट में बहुत कुछ गुह्य रहस्य समाए हुए हैं, वह रहस्य क्या था? सुनाया था ना समय की सूचना देने लिये बीच-बीच में घंटी बजा कर जगाते हैं। इसलिए आपके जड़ चित्रों के आगे घंटी बजाते हैं। उठाते भी हैं घंटी बजा कर, फिर सुलाते भी हैं घंटी बजा कर। यह भी समय की सूचना - घंटियां बजती हैं। क्योंकि जैसे शास्त्रवादियों ने लम्बा-चौड़ा टाइम बता कर सभी को सुला दिया है। खूब अज्ञान नींद में सभी सो गये हैं क्योंकि समझते हैं अभी बहुत समय पड़ा है। तो यहां फिर जो दैवी परिवार की आत्माएं हैं उन्हों को चलते-चलते माया कई प्रकार के रूप-रंग, रीति-रस्म के द्वारा अलबेला बना कर समय की पहचान से दूर, पुरुषार्थ के ढीलेपन में सुला देती है। जब कोई अलबेला होता है तो आराम से होता है। जिम्मेवारी होने से अटेंशन रहता है कि हमको टाइम पर उठना है, यह करना है। अगर कोई प्रोग्राम नहीं तो अलबेला हो सो जावेगा। तो यह भी अलबेलापन आ जाता है। जब कोई अलबेले हो ढीले पुरुषार्थ के नींद के नशे में मस्त हो जाते हैं तो क्या करना पड़ता है? उनको हिलाना पड़ता है, हलचल करनी पड़ती है कि उठ जाये। जैसी-जैसी नींद होती है वैसा किया जाता है। बहुत गहरी नींद होती है तो उसको हिलाना पड़ता है लेकिन कोई की हल्की नींद होती है तो थोड़ी हलचल करने से भी उठ जाता है। अभी हिलाया नहीं है, थोड़ी हलचल हुई है। दूसरी चीज को निमित्त रख उसको हिलाया जाता है। तो जागृति हो जाती है। यह भी ड्रामा में निमित बनी हुई जो सूचना-स्वरूप मूर्तियां हैं, उन्हों को थोड़ा हिलाया, हलचल की तो सभी जाग गये। क्योंकि हल्की नींद है ना। जागे तो जरुर लेकिन जागने के साथ रेड़ी तो नहीं की? ऐसे होता है, कोई को अचानक जगाया जाता है तो वह घबरा जाता है- क्या हुआ? तो कोई यथार्थ रूप से जागते हैं, कोई कुछ घबराने बाद होश में आते हैं। लेकिन यह होना न चाहिए, जरा भी चेहरे पर रूपरेखा घबराने की न आनी चाहिए। आवाज में भी चेंज न हो। आवाज में भी अगर अन्तर आ जाता

है वा चेहरे में भी कुछ चेंज आ जाती है तो इसको भी पास कहेंगे? यह तो कुछ नहीं हुआ। अभी बहुत कड़े पेपर तो आने वाले हैं। पेपर को बहुत समय हो जाता है तो पढ़ाई में अलबेलापन हो जाता है। फिर जब इम्तिहान के दिन नजदीक होते हैं तो फिर अटेंशन देते हैं। तो यह अभी तो कुछ नहीं देखा। लेकिन अभी तो ऐसे पेपर्स आने वाले हैं जो स्वप्न में, संकल्प में भी नहीं होगा। प्रैक्टिस ऐसी होनी चाहिए जैसे हद का ड्रामा साक्षी हो देखा जाता है। फिर चाहे दर्दनाक हो वा हंसी का हो, दोनों पार्ट को साक्षी हो देखते हैं, अन्तर नहीं होता है क्योंकि ड्रामा समझते हैं। तो ऐसी एकरस अवस्था होनी चाहिए। चाहे रमणीक पार्ट हो, चाहे कोई स्नेही आत्मा का गम्भीर पार्ट भी हो तो भी साक्षी होकर देखो। साक्षी दृष्टा की अवस्था होनी चाहिए। घबराई हुई या युद्ध करती हुई अवस्था ना हो। कोई घबराते भी नहीं हैं, युद्ध में लग जाते हैं। जरुर कुछ कल्याण होगा। लेकिन साक्षी दृष्टा की स्टेज बिल्कुल अलग है। इसको ही एकरस अवस्था कहा जाता है। वह तब होगी जब एक ही बाप की याद में सदा मग्न होंगे। बाप और वर्सा बस, तीसरा ना कोई। और, कोई बात देखते-सुनते वा कोई संबंध सम्पर्क में आते हुए ऐसे समझेंगे जैसे साक्षी हो पार्ट बजा रहे हैं। बुद्धि उस लग्न में मग्न। बाप और वर्से की मस्ती रहे। इसलिए अब ऐसी स्टेज बनाओ, इसके लिए अपनी परख करने के लिए यह पेपर आते हैं। नहीं तो मालूम कैसे पड़े? हरेक की अपनी स्थिति को परखने के लिये थर्मामीटर मिलते हैं, जिससे अपनी स्थिति को स्वयं परख सको। कोई को कहने की दरकार नहीं, घबराना नहीं, गहराई में जाओ तो घबराहट बंद हो जावेगी। गहराई में न जाने कारण घबराते हो। मधुबन निवासियों के लिए खास मिलने लिये आये हुए हैं। इसमें भी श्रेष्ठ भाग्यशाली हुए ना। और तो प्रोग्राम बनाते रहते। आप बिगर प्रोग्राम प्राप्त करते हो। तो विशेषता हुई ना। मधुबन में बाप स्वयं दौड़ी पहन आते हैं। रिजल्ट तो अच्छी है। वह तो....जरा-सी हलचल थी। उस 'जरा' को समझ गये ना। अब इसको भी निकालना है। जरा भी फ्लॉ (दोष) फेल कर देता है। लास्ट फाइनल पेपर में अगर जरा-सा फ्लॉ आ गया तो फेल हो जावेंगे। इसलिए पहले से

Practical Scenario

समजा?

Attention Please...!

from this moment...

पेपर होते हैं परिपक्व बनाने के लिये। बाकी अभी की रिजल्ट बहुत अच्छी है। सभी एक दो में स्नेही, सहयोगी अच्छे हैं। सुनाया था ना कि सूक्ष्म सर्विस की मशीनरी अब चालू होती है। तो मधुबन निवासियों से विशेष सूक्ष्म सर्विस की मशीनरी अब चालू हो गई है। और भी सेवा केन्द्रों पर सूक्ष्म सर्विस चालू तो है लेकिन फिर भी वर्तमान रिजल्ट अनुसार इस सर्विस में नम्बरवन मधुबन निवासी हैं। इसलिए मुबारक हो! जैसे अभी तक स्नेह और सहयोग का सबूत दे रहे हो, वही सबूत औषधि के रूप में जहां पहुंचाने चाहते हो वहां पहुंच रहा है। आपकी पावरफुल औषधि है ना। जैसे-जैसे आप की पावरफुल औषधि पहुंचती जाती है, वैसे-वैसे स्वस्थ होते जा रहे हैं। इसमें भी पावरफुल औषधि भेजते रहेंगे तो एक हफ्ता में भी ठीक हो सकते हैं। मार्जिन है तेज करने की। फिर भी रिजल्ट अच्छी है। ऐसी अच्छी रिजल्ट को देखते हुये लाइट-हाऊस की लाइट चारों तरफ पहुंच रही है। उससे और स्थानों में भी लाइट हाऊस का प्रभाव पड़ रहा है।

5/6/25

(19.09.1972)